आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:31/12/2022; Published:31/01/2023

वे मेरे लोग हैं

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

मूल: सिद्धलिंगय्या जी (कन्नड)

भूख से मरते हैं बड़े पत्थर ढोते हैं
उनकी पीठ पर लात मारी जाती है
वे मेरे लोग हैं।
हाथ पैर जोड़कर दया की भीख माँगते हैं ,
जो इतने भक्तो के भक्त है
वे मेरे लोग हैं।

मिट्टी में बोकर बीज फसल काटते
चिलचिलाती धूप में पसीने से तरबतर होते हैं
वे मेरे लोग हैं।
वे खाली हाथ लौट और लंबी सांसे भरते हैं
फटे हाल और खाली पेट होते हैं
वे मेरे लोग हैं।

ऊँचे मकान और बंगले बनाते हैं
और उसी के नीचे दब जाते हैं
वे मेरे लोग हैं
सड़कों पर गिर जाते फिर भी चुप रहकर
भीतर ही भीतर रोते हैं
वे मेरे लोग हैं।

सूद भरते हैं भाषणों की आग में
जलकर खाक होते हैं
वे मेरे लोग हैं -
भगवान का नाम लेकर परमअन्न खाते हैं
जूते सिलते है

वे मेरे लोग हैं-

वे सोना निकालते हैं पर रोटी नहीं खा सकते
वस्त्र बुनते हैं फिर भी नग्न देह है
जो कहा जाता है वही वे करते हैं
बस हवा पर जीते हैं
वे मेरे लोग हैं।

****